ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3586789

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

बारेला जनजाति की लोक कलाएँ

डॉ. आनन्दसिंह पटेल [1]

[1] शासकीय लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, सिरोंज जिला विदिशा (म.प्र.)

शोध-सारांश
आदिवासी पारम्परिक कलाएँ किसी न किसी अनुष्ठान और पर्व-उत्सव से जुड़ी रहती है। लोक में प्रचलित कलाएँ जिनमें अनुष्ठान की गहरी प्रक्रिया और वृद्धि निहित होती है, ऐसी लोक कलाएँ जो प्रदर्शनकारी के रूप में बनायी जानी चाहिए। ऐसी विधाएँ जिनमें अनुष्ठान बहुत कम हैं, जिनमें प्रदर्शन की पूरी क्षमता है। उन्हें ही प्रदर्शनकारी रूप देने का प्रयास करना चाहिए।[1]

मुख्य शब्द – बारेला, जनजाति, लोक कलाएँ

Cite This Article: डॉ. आनन्दसिंह पटेल. (2019). "बारेला जनजाति की लोक कलाएँ." *International Journal of Research -Granthaalayah*, 7(11SE), 165-171. https://doi.org/ 10.5281/zenodo.3586789.

कला मानव की बौद्धिक प्रतिभा और शारीरिक क्षमताओं के समन्वय की अद्‌भूत प्रस्तुति है। कला के विकास में मानव की शारीरिक क्षमताओं ने उसकी अत्यधिक सहायता की है। कला रुपायन के लिए न केवल कल्पनाशील मस्तिष्क की आवश्यकता होती है बल्कि रूपायन के लिए तीक्ष्ण और केन्द्रीयता का अपना महत्त्व है।

बारेला जनजाति की प्रत्येक वस्तु में कला के आयाम उपस्थित होते हैं। जीवन के व्यवहार में आने वाले पदार्थ को सौन्दर्य की दृष्टि से देखना उनकी जीवन शैली बन गई हैं। प्रकृति के सांनिध्य में इन लोगों ने प्रकृति के समस्त उपादानों का भरपूर आस्वाद किया है।[2]

बारेला लोककलाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। वहाँ सर्व सुलभ साधनों के न होने के बावजूद भी अपनी विविध लोककलाओं को पारम्परिक रूप से अचंल में आधुनिकता कैनवास, ब्रश इत्यादि के बजाय सरल, सादे एवं प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों को अपनी कलाकारी का माध्यम बनाते हैं। बारेला जनजाति में अनेक रूपों से प्राकृतिक वस्तुओं से अनेक सुन्दर काष्ठ कला, चित्रकला, मूर्तिकला, मिट्टी के बर्तनों पर विविध कलाकृति, चित्रों का सृजन करते हैं।

निमाड़ अंचल में अनेक जनजातियाँ पायी जाती है। ये सभी एक-दूसरे से परस्पर जुड़ी है। जिसके कारण निमाड़ का सांस्कृतिक परिवेश अत्यन्त समृद्ध और गौरवशाली है। पौराणिक नायकों से लेकर अनेक गौरवशाली वंशों ने यहाँ शासन किया। जिसके फलस्वरूप निमाड़ की कला और संस्कृति प्रभावित हुई हैं।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3586789

जनजातियों में बारेला, भिलाला, भील, पटलिया, राठया, बंजारा ये सभी अपनी अलग-अलग संस्कृति और परम्पराओं का निर्वाह करते आये हैं। प्रमुख शिल्पकलाएँ निम्नलिखित है।

1. **शिल्प**-विभिन्न शिल्प कलाओं में परम्परागत रूप से काम करने वाले लोगों की समाज में बहुत पहले से जातिगत पहचान बन गयी थी। मिट्टी से कुम्भ बनाने वाला कुम्भकार, लौहे से औजार बनाने वाला लौहार, ताँबे का काम करने वाला ताम्रकार, काष्ठ कला का कार्य करने वाल सुतार, स्वर्ण का काम करने वाला स्वर्णकार, बाँस फोड़ आदि जातियाँ परम्परागत रूप से प्रतिष्ठित हुई हैं। जातियाँ जीवनोंपयोगी वस्तुओं का निर्माण और बिक्री प्रारम्भ से करती आयी है। उपयोगी सामग्री के साथ सौन्दर्यपूर्वक और अलंकरण युक्त अनुष्ठानिक अनुपूर्तियाँ भी इन्हीं जातियों पर आश्रित होने के कारण ये जातियाँ हमारी संस्कृति की धरोहर है। इन शिल्प विधाओं में उनकी प्राचीन कला और संस्कृति का परिचय मिलता है। वे किसी बाहरी वस्तुओं पर निर्भर रहते हैं। एक आदिवासी मिट्टी, लकड़ी, बाँस, घास-पत्तों इत्यादि की उपयोगी और जनजातियों के पारस्परिक शिल्पों में वैविध्य के साथ आदिकाल से सहज रूप से दिखाई देती है।[3]

बारेला जनजाति के लोग विभिन्न प्रकार के शिल्पकला में अपनी महारत हासिल की है। जिसमें लकड़ी की कलात्मक वस्तुओं के लिए सुतार, मिट्टी के बर्तन और मुर्तियाँ, बाँस की वस्तुओं के लिए आदि बारेला लोग अपनी-अपनी पारस्परिक और कलात्मक शिल्पों के निर्माण, संरक्षण और विस्तार में लगे हैं। शिल्पकलाओं में बारेला का बहुआयमी रूप रहा है, जो कहीं-न-कहीं इनकी लोक परम्पराओं का घोतक है। बारेलाओं की शिल्पकलाएँ निम्नलिखित है-

1. **काष्ठ शिल्प** - काष्ठ शिल्प की परम्परा बहुत प्राचीन और समृद्ध है। निमाड़ में काष्ठ शिल्प का कार्य पारम्परिक रूप से भी बारेला जनजाति के लोग भी करते आये हैं। वे लकड़ी के कलात्मक दरवाजे, खिड़कियाँ, बैलगाड़ी, खेती के समस्त औजार, पलंग, कुर्सी, टेबल, अलमारियाँ घर आदि का निर्माण करने में बारेला लोग दक्ष है। काष्ठ घट्टी आदि पर सुन्दर कलात्मक नक्काशी करने की परम्परा बहुत पुरानी है। प्राचीन समय में बारेलाओं का मकान प्रायः लकड़ी के होते थे। जिनके गाखड़ों, गलरियों बाह्य दरवाजों की विशेष कलात्मक नक्काशी सज्जा की जाती है। बैलगाड़ी में 'छैकड़ी' बैलगाड़ी जो विशेष तौर पर नक्काशी कलात्मक ढंग से कि जाती है। सजावटपूर्ण छैकडी बारेलाओं की आकर्षण का केन्द्र बिन्दु होती है।

बारेला की सबसे महत्त्वपूर्ण कलाकृति है, बोतल में काष्ठ शिल्प कला भी एक अद्‌भुत कला है। काष्ठ शिल्पकला जनजाति के लोग बोतल के भीतर बैलगाड़ी, हल, टेबल, खटिया इत्यादि। बारेलाओं के प्रमुख लोक वाद्‌य भी काष्ठ के बने हुए है। जिसे बारेला जनजाति ने कला के रूप में प्रस्तुत किया है।

2. **बाँस शिल्प**-निमाड़ अंचल के विभिन्न बारेला जनजाति के लोग अपनी जीविका चलाने के लिए बाँस की बनी वस्तुओं को बाजार में बेचकर जीवनयापन करते हैं। ये बाँस से कलात्मक सौन्दर्य और जीवनोपयोगी वस्तुएँ निर्मित करते हैं। निमाड़ के आँचलिक हाट बाजार में बाँस से बनी वस्तुएँ देखी जा सकती है। इन जीवनोपयोगी वस्तुओं में टोकनी-टोकना, टोपली-टोपला, सूपड़ा, मुठी, (बड़ी कोठी अनाज रखने के लिए) मुड़ियों (मछली मारने की झाली) आदि।
3. **मिट्‌टी शिल्प**-निमाड़ अंचल के विभिन्न बारेला जनजाति के लोग आज भी अपना पुराना परम्परागत व्यवसाय को अपनाये हुए हैं। मनुष्य ने सर्वप्रथम दैनिक जीवन में प्रयोग में आने वाले मिट्‌टी के बर्तन सबसे पहले बनाया था। यह बारेलाओं का कृषि के अलावा अतिरिक्त व्यवसाय है।

ग्रामीण अंचलों में अनेक सृजन के केन्द्रीय भूमिका है। ये जीवन की अनिवार्य वस्तु जिसमें, खापरों, तवला (दाल, सब्जी बनाने की वस्तु), मटकी, डुमणो (आटा मसलने का बर्तन) ईट, कवेलू, गमले, दाबों-गुड़ों (लोक

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3586789

देवता आयखेड़ा पर चढ़ाया जाता है) साथ-साथ खिलौने, मूर्तियाँ आदि कलात्मक शिल्पों का निर्माण भी करते हैं। धार्मिक अनुष्ठान के लिए मिट्टी के कलश, विविध, पर्वों पर उपयोगी वस्तुओं को बनाते हैं। दिपावली के अवसर पर दीप लक्ष्मी विविध रंगों से सजाई जाती है।

4. **सन-सुतली (रस्सी) शिल्प**-बारेला जनजाति में सन और आंबाड़ी की खेती प्रमुख रूप से कि जाती है। जिसमें सन और आंबाड़ी की रस्सी बनाने का कार्य हर किसान के घर होता है। इनमें खटिया भरने की विभिन्न शैलियाँ प्रचलन प्रमुख है। सन की रस्सी से गूंथी थैलियाँ, आसन, सुतली आदि।
5. **पत्ता शिल्प-पत्ता शिल्प**- कला में बारेला जनजाति के लोग दक्ष है। पेड-पौधें में विभिन्न आकारों में मिलने वाले पत्तों के प्रति मनुष्य का तरह-तरह से कलात्मक कला अति प्राचीन काल से ही आकर्षित रहा है। मानव ने इन पत्तियों के माध्यम से अपना रोजगार ढूंढ़ा है। खजूर के पेड़ कि पत्तियों से झाडू, बड़ तथा पलाश कि पत्तियों से पत्तल, दोणे आदि बनाये जाते हैं।

2. **चित्र**-बारेला जनजाति के लोग अपने घरों में कलात्मक चित्र बनाते हैं। चाहे घर की दीवार हो या शरीर पर गुदना हो इन सभी पर चित्र कलात्मक रूप से बनाये जाते हैं। ये अपने घरों में घट्टी (चक्की) की थालों, घर के दरवाजों, टेबल, कुर्सी, घर के खम्बों इत्यादि पर कलाकृति का एक ऐसी कलात्मक चित्र बनाये जाते हैं जो अपने आप में एक अद्भुत चित्रकारी है। शैल चित्र और भित्ती चित्रों के चित्रांकन का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। विकासपूर्व की अवस्था में भी वह चित्रांकन करता रहा है। रंग भी उसने प्रकृति से ग्रहण किया है। बारेला जनजीवन के ऐसे बहुत से चित्र है, जो उसकी लोकसंस्कृति को बयाँ करते हैं।

3. **संगीत**-मानव जीवन में संगीत का अपना विशेष महत्त्व है। इसके बिना जीवन के तारों का आनन्दमय होना असम्भव है। लोकगीतों के साथ लोक वाद्य का अटूट रिश्ता है। जहाँ कहीं भी गीत गाने का सिलसिला शुरू हुआ तो लोक वाद्य किसी भी रूप में थाली ढोल, मंजीरा इत्यादि के रूप में उपस्थित हो गया। इतना ही नहीं इनकी मधुरता जीवन में चेतना प्रदान करती है और सुनने वाले को गुनगुनाने के लिए मजबूर कर देती है। ये लोकवाद्य लोकगीतों में विभिन्न राग-रागनियों के उतार-चढ़ाव के साथ ऐसा समा बांध देते है कि व्यक्ति सुनते समय अपनी सुध-बुध खो बैठता है।

संगीत लोकसंस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। बारेला आरम्भ से ही संगीत प्रेमी रहे हैं। वर्षों से वे वाद्य बजाते रहे हैं। इसलिए इनसे निकलने वाला संगीत आज भी धुन पर बारेला इतने मधुर गीत गाते हैं कि मन मंत्रमुग्ध हो जाता है। नगाड़े को लघु रूप भी वे गले में लटकाकर हाट बाजारों में गाते बजाते हुए देखे जा सकते हैं। लोक संगीत और लोकगीत के भण्डार को बारेला आदिवासी वर्षों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित करते आ रहे हैं। यह आज भी अक्षुण्ण है।

लोक जीवन में दूसरा स्थान लोकधुन एवं लोक वाद्यों का है। बारेला के लोक वाद्यों को तीन भागों में विभाजित किया गया है-

1) खाल में मढ़े हुए-ढोल, मांदल, डफ, टुमकली, ढाक इत्यादि।
2) फूंक से बजाने वाले-बाँसूरी, गागुव इत्यादि।
3) तार से बजने वाले-झुनखा, रन्था इत्यादि। प्रमुख वाद्य-

1) **ढोल**-बारेला समाज का पारम्परिक लोक वाद्य है। यह काष्ठ का बनाया जाता है। यह दूसरा सर्वाधिक उपयोग में आने वाला वाद्य है। विशेष रूप से होली के अवसर पर भगोरिया नृत्य में इसको गले में

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3586789

लटकाकर पूरे बाजार में बाँस की कमची से बजाते हैं। ढोल पर 'डबव-डबव तव-तव मीर ढंग दौडावनी और उबली चाल बजायी जाती है। यह होली, भगोरिया, इन्दल आदि त्यौहार पर बजाया जाता है।

2) **मांदल**-मद्दंग का अपभ्रंश है यह भी काष्ठ का बनाया जाता है। इसकी आवाज बहुत तेज होती है। इसके साथ थाली, बिन, ठुमकली बजाये जाते हैं। यह शादी, मृत्यु, शोक सभा होली इत्यादि के अवसरों पर बजाते हैं। यह परम्परागत लोक वाद्य इसके बिना कोई भी अनुष्ठान कार्य नहीं किया जा सकता है।
3) **ढोलक**-यह भी ताल वाद्य है जो मांदल से छोटा होता है। इसमें विभिन्न लय कारियाँ दिखाई जाती है। यह मुख्य रूप से भजन मंडली, विवाह आदि अवसर पर बजाया जाता है।
4) **बाँसुरी**-यह प्रत्येक आदिवासी युवा का प्रिय वाद्य है। बारेला लोग इस 'पिहवी' कहते हैं। जिसे बारेला लोग अपनी मन पसंद आकार देकर स्वयं बाँस को काटकर बना लेते हैं। कुछ लोग बाजार से मोल में ले आते हैं। बारेला समाज के युवा वर्ग जब पशुओं को चराने के जंगल में जाते है तो बाँसुरी की धुन जंगल में महक उठती है।
5) **ठुमकली**-बारेला समाज का प्राचीनतम वाद्य है। यह गोल और सबसे छोटा होता है। यह खासतौर पर ढोल के साथ सहभागिता में अद्भुत संगीत का मिलन होता है। जिससे 'ढुक-ढुक' मधुर ध्वनि का शंखनाद होता है। इसे कमर और ढोल के साथ बांधकर बजाया जाता है।
6) **फेफारिया (शहनाई)**-बारेला समाज में लोग इसे फेफरिया कहते हैं। यह वाद्य बाजार से खरीदा जाता है। इसे भी कलात्मक ढंग से सजाया जाता है। इससे लोक धुन बजाई जाती है। इसका स्वरूप शास्त्रीय शहनाई से भिन्न होता है। यह शादी, मृत्यु और शोक सभा के अवसर पर बजाया जाता है।
7) **रन्था**-यह वाद्य नारियल का खोखला भाग, बाँस का 15-17 इंच लम्बा, चमड़ा, बाँस की चीप और घोड़े के बाल आदि से बनाया जाता हैं। इसे को होली, भगोरिया, मेल आदि अवसर पर बजाया जाता है।
8) **थाली**-यह पीतल या काँसे की होती है। इसे डण्डी से बजाने पर टन-टन की ध्वनि निकलती है। यह ढोल, मांदल, का जुगलबंदी वाद्य है। इसके बिना इनका वादन सम्भव नहीं होता है। ढोल और मांदल की थाप के साथ थाली की गुंज ढोल और मांदल की ध्वनि में मिठास के साथ स्वर लहरी को पूर्ति भी कर देती है।
9) **गागुव (बाँस)**-यह वाद्य बाँस की चिप द्वारा निर्मित किया जाता है। यह गागुव बाँसुरी का सहयोगी वाद्य है। मुंह से बजाते समय चीरे हुए फंगसे को ओठों के बीचों-बीच रखकर हल्की फुंक लगाते हुए धागे से उसे बाहर की ओर खींचते हैं, इससे धुन निकलती है।
10) **तम्बूरा (झुनखा)**-यह एक तार वाद्य है। यह लौकी का बनाया जाता है। जिसे मधुर मनमोहक ध्वनि निकलती है। बारेला समाज संगीत प्रेमी इसे होली और भगोरिया आदि त्यौहार पर घर-घर जाकर गीत गाते हुए होली के फाग मांगते हैं। यह बारेलाओं का पारम्परिक लोक वाद्य है जो कि प्राचीन समय से प्रचलित है।

4. नृत्य-भारतीय जीवन शैली में मनोरंजन का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। बिना मनोरंजन के मानव का जीवन निष्क्रिय सा हो जाता है। लोक जीवन में नृत्यों का बड़ा महत्त्व है। जनजाति में अनेक त्यौहार एवं पवोरं् जिसमें नृत्य भी होता है। नृत्य के बिना ये पर्व-त्यौहार बिल्कुल अधूरा माना जाता है। इसी के साथ ही हमारे देश में धार्मिक अनुष्ठानों में नृत्य एक महत्त्वपूर्ण उपादान रहा है।

भारतीय जनजातीय परम्परा में नृत्य कला का बड़ा महत्त्व हो इससे उनका उल्लास प्रकट होता है। बारेला जनजाति भी इसका अपवाद नहीं बारेला वनवासियों की नृत्य कला का प्रमुख लक्ष्य देवी-देवताओं को प्रसन्न

करना एवं उनकी सामाजिक और धार्मिक विशेषताओं के पूर्ण दर्शन करना रहा है। जिस प्रकार वन की सोंधी माटी नगर की चिकनी सड़कों को प्राणवती बनाती है, उसी प्रकार यह सहज नृत्य कला शास्त्रीय नृत्यों की आन्तरिक भावभूमि को निरन्तर उद्वेलित करती रहती है।

बारेला जनजाति के प्रायः सभी उत्सव नृत्य से प्रारम्भ होते है और नृत्य से ही समाप्त बसन्तोत्सव आदिवासी नृत्यों को नया जीवन देता है। भगोरिया होली, आदि पर्वों पर नृत्य प्रमुखता से होता है। नई फसल आने पर भी वे नृत्य करते हैं। अतः उल्लास के अनन्त पल नृत्यों से रसवान बनते हैं। विवाह उत्सव में तो विशेष रूप से नृत्य गान होता है।

पश्चिम निमाड़ के वन प्रांतरों में नृत्य और गीत की परम्परा उनके सांस्कृतिक वैभव के प्रति सोचने के लिये विवश करती है। चाहे कस्बों से लगे गाँव हो या गाँव से लगे फाल्या हो। दूर दूराज इक्के-दूक्के झोपड़ों में भी उनके राग रंग, नृत्य और गीत के रूप में आज भी प्रचलित है। गीत नृत्य को दिशा, आकार और पहचान प्रदान करते है। वास्तव में उनके लोकनृत्य बारेला की लोकसंस्कृति के गौरवशाली इतिहास को बयाँ करती है। बारेलाओं का प्रमुख लोकनृत्य निम्नलिखित है-

1) **डिस्को नृत्य**-यह शादी के दिन रात्रि में किया जाने वाला लोक नृत्य है। इसमें पुरुष और महिला दोनों सामूहिक रूप से मांदल, थाली, शहनाई ठुमकली आदि के साथ गोल घेरा बनाकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य लय और ताल का अनमोल मिश्रण होता है। जब बारेला लोग नृत्य करते है तो इसकी भावभंगिमा भी नृत्य की अनुरूप होती है। इस नृत्य में रंग-बिरंगी पारम्परिक वेशभूषा में सजी-धजी युवक युवतियाँ हाथ में रूमाल लेकर नृत्य करती है। इससे बारेलाओं का शौर्य और श्रृंगार का दिग्दर्शन कराता है। यह नृत्य होली, इन्दल आदि त्यौहारों पर किया जाता है।
2) **भुंवी नृत्य**-यह शादी के दिन रात्रि में सर्वप्रथम किया जाने वाला लोक नृत्य है। यह नृत्य बाँस की बनी हुई टोकरी जो कि विशेषकर शादी के लिए ही बनायी जाती है। जिसे 'भुंवी' कहते हैं। भुंवी से ही भुंवी नृत्य पड़ा। उसे विभिन्न प्रकार के श्रृंगार से श्रृंगारित किया जाता है। इस भुंवी को दूल्हें या दुल्हन की छोटी कँुवारी बहन पूजारा (ओझा) पारम्परिक लोक गीत गाने वाली बुर्जुग महिलाएँ (गिताणी) गोल घेरा बनाकर पंक्तिबद्ध रूप से मांदल थाली, शहनाई, ठुमकली आदि के साथ पाँच चक्कर लोक नृत्य करते हैं। उसके बाद दूसरे लोग भुंवी को लेकर नृत्य करते हैं। बारेला भुंवी नृत्य को आत्मीयता से करते हैं।
3) **दौड़ नृत्य**-यह भी शादी लोक नृत्य है। इसमें सम्मिलित रूप से स्त्री-पुरुष का अलग-अलग समूह होता है। प्रत्येक समूह में एक-दूसरे के हाथ में हाथ बांधकर आगे-पीछे होकर तीव्रगति से किया जाने वाला लोक नृत्य है। यह नृत्य मांदल, थाली, शहनाई ठुमकली आदि पर किया जाता है।
4) **गीत नृत्य**-यह बिना वाद्‌य से किया जाने वाला नृत्य है। इसमें स्त्री-पुरुष आमने-सामने पंक्तिबद्ध खड़े होकर आगे-पीछे की ओर एक-दूसरे के कन्धे पर हाथ रखकर पैर को आगे पीछे करके नृत्य किया जाता है। इसके साथ गीत भी गाया जाता है। कहीं-कहीं पर एक पंक्ति में पुरुष एवं दूसरी पंक्ति में महिलाएँ होती है। जिसमें गीतों के माध्यम़ से दूल्हे या दुल्हन के पक्ष में कसीदे कसते हुए नृत्य करते है। यह शादी के सात दिन पूर्व से किया जाने वाला गीत नृत्य है जो कि शादी के दिन तक चलता हैं।
5) **गैर नृत्य**-यह होली का नृत्य है जो पुरुषों द्वारा किया जाता है। यह होली के एक माह पूर्व से होली के पाँच दिन तक चलने वाला नृत्य है। यह ढोल, थाली, बाँसुरी, ठुमकली आदि के साथ किया जाने वाला नृत्य है। इसमें पुरुष द्वारा विभिन्न प्रकार के बहरूपियाँ बनकर जिसमें लड़की, महिला, रीछ, काली, सिपाही, हनुमान इत्यादि का रूप धारण कर होली के पाँच दिनों तक यही वेशभूषा में आसपास के सभी गाँवों में जाकर रातभर होली उत्सव में नाचते है और सुबह घर-घर जाकर नाचते हुए दक्षिणा

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3586789

मांगते है और कहीं-कहीं पर होली का मेलादा (मेला) का भी आयोजन होता है। मेलादा में सभी गैर दल आकर नाचते है। यह सबसे सुन्दर और कलात्मक नृत्य है। इस नृत्य को करते समय गैर समूह किलकारियाँ भरते हुए हुर्रे-हुर्रे कुर्रे...की गर्जना करते हैं।

6) **भगोरिया नृत्य**-होली के सात दिन पूर्व भगोरिया पर्व का आयोजन किया जाता है। यह स्त्री-पुरुष बच्चे सभी ढोल थाली एवं बाँसुरी के साथ किया जाने वाला लोक नृत्य है। जब आदिवासी बारेला इन वाद्य की धुन पर उनके मन में मयूर नाचने लगते है तो यह नृत्य गीत के साथ भी किया जाता है। भगोरिया में आये सभी नर्तक दलों द्वारा ढोल पर भगोरिया नृत्य किया जाता है। रंग-बिरंगी वेशभूषा में सजे-धजे युवक-युवतियाँ बाँसुरी का वादन के साथ गीत गाते हुए नाचते-नाचते जाते हैं।
7) **इन्दल नृत्य**-यह पारम्परिक धार्मिक लोक नृत्य है। यह इन्दीराजा (लोकदेवता) को प्रसन्न करने के लिए या किसी की मन्नत पूर्ण हो जाने के उपलक्ष्य में इन्दल पर्व का आयोजन किया जाता है। इन्दल पाँच साल में एक बार आयोजित किया जाता है। इन्दल नृत्य गीत के साथ भी किया जाता है। जिसमें स्त्री-पुरुष एवं बच्चों के द्वारा भी सामूहिक रूप से स्त्री-पुरुष भी कतारबद्ध आमने-सामने पैर आगे-पीछे करके कमर को झुका लेते है और नृत्य करते हुए गीत गाते हैं।

5. नाट्य-मनोरंजन की दृष्टि से लोकनाटयों का बारेला समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। लोक में अपने मनोरंजन की मौलिक परम्पराएँ है। हर अंचल में अपने-अपने ढंग की लोकरंग शैलियों का पारम्परिक विकास है। जिन्हें हम लोक नाट्य कहते हैं।

बारेली नाट्य दिपावली, मेला, होली एवं अन्य उत्सवों पर मनोरंजन के रूप में नाट्य मण्डली द्वारा किया जाता है। बारेली नाट्य में कुछ प्रसंगों में पुरुष द्वारा काष्ठ एवं रबर का मुखौट बनाकर उनकी हर क्रियाकलापों में वन्यजीव की झलक प्रमुख रूप से उद्घाटित होती है। बारेली नाट्य में बारेला जनजाति का आईना होता है जो निम्न है-

1) जात्रा नाट्य-जात्रा नाट्य खासतौर पर मेले के अवसर पर किया जाता है। जिसमें मंच ऊँचा और चारों तरफ खुला होता है। यह हास्य और व्यंग्यात्मक शैली में किया जाता है। यह रातभर चलने वाला नाट्य है। इसमें पौराणिक आखयान लोककथा, लोकगाथा तथा वर्तमान समसामयिक घटना, फिल्म आदि पर हास्य व्यंग्यात्मक मार्मिक भाव के साथ किया जाता है। इसमें पुरुष द्वारा लड़के-लड़कियों कि वेद्नाभूषा सजे-धजे पात्रों द्वारा नोंक-झोंक के साथ चुटिले संवाद में ढोलक, पेटी, आदि वाद्य की धुन पर बीच-बीच में संवाद के साथ नृत्य भी किया जाता है। यह नाट्य पूर्ण रूप से सामाजिक होता है। किसी भी प्रकार का कोई अश्लील संवाद नहीं किया जाता है।
2) रामलीला एवं कृष्णलीला नाट्य-यह धार्मिक प्रसंगों पर रामलीला का आयोजन किया जाता है। यह रामकथा पर आधारित होता है जिसमें राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, रावण, अंगद आदि के संवाद का हास्य और व्यंग्य रूप में किया जाता है। इसके अलावा कृष्ण जन्म अष्टमी में कृष्णलीला के विभिन्न प्रसंग जिसमें मुखय रूप से कृष्ण जन्म, माखन चोरी, सुदामा कृष्ण संवाद, कंस वध आदि प्रसंगों की प्रस्तुति परम्परागत होती है। रामलीला में संवाद के साथ गीत नृत्य और संगीत के साथ किया जाता है। रामलीला गाँव में सामान्य रूप से एक मंच पर किया जाता है।

निष्कर्ष-

बारेली लोकसाहित्य में लोक कलाओं का प्राचुर्य देखने को मिलता है, जिसमें शिल्प, चित्र, संगीत आदि कलाएँ देखने को मिलती है। बारेला आदिवासियों की प्रत्येक वस्तु में कला के आयाम उपस्थिति होते हैं। प्रकृति के सानिध्य में इन लोगों ने प्रकृति के समस्त उपादानों का भरपूर आस्वाद किया है। बारेला लोक कलाओं की सबसे बड़ी विशेषताएँ है। यहाँ सर्व सुलभ साधनों के न होने के बावजूद भी अपनी विविध लोक कलाओं को

पारम्परिक रूप से मुर्त रूप देने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। शिल्प कला में विभिन्न प्रकार की शिल्पकलाएँ की जाती है। लकड़ी, बाँस, मिट्टी एवं सन-सुतली इत्यादि। बारेली लोकसाहित्य में बारेला जनजाति के चित्र, शिल्प कला में आज भी सिद्धहस्त है उनके चित्रों में प्राचीन चित्रशैली की झलक मिलती है।

बारेला लोकसाहित्य में संगीत के लिए इनके परम्परागत लोक वाद्य है ढोल, मांदल आदि वाद्य त्यौहार पर बजाये जाते हैं। बिना वाद्य के नृत्य एवं संगीत बेजान हो जाता है। बारेला स्त्रियों-पुरुषों के नृत्य कोमल, सरल एवं चित्तार्कषक होते हैं। सौन्दर्यानुभुति अनुस्थल बारेला आदिवासी की कलाएँ अपने महत्त्व में गरिमामय है। बारेली लोकसाहित्य में नृत्य भी अलग-अलग होते हैं। इनके नृत्यों में मुखयतः डिस्को नृत्य, भुंवी नृत्य आदि नृत्य होते हैं। बारेली लोकसाहित्य में नाट्य परम्परा का विकास भी हुआ है। नाट्य परम्परा में मुख्यतः जात्रा, रामलीला आदि मुख्य नाट्य होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

[1] श्री वसन्त निरगुणे: आदिवर्त म.प्र. की प्रमुख जनजातियाँ: पृ. 35
[2] डॉ. गुलनाज तवर: बारेला जनजातिय जीवन एवं संस्कृति: पृ. 151-152 म.प्र. संस्कृति परिषद् भोपाल।
[3] श्री वसन्त निरगुण: आदिवर्त म.प्र. की प्रमुख जनजातियाँ: पृ..40
[4] डॉ. वर्षा खुराना (सम्पा.): लोक साहित्य: प्रथम संस्करण 2017, आस्था प्रकाशन., नागपुर।
[5] डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय: लोक साहित्य की भूमिका: संस्करण 2010, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद।
[6] डॉ. कृष्णबीर सिंह (सम्पादक): रिसर्च एनालिसिस एण्ड इवैल्युशन: vol-II, Issue-18 march-2011, प्रकाशक जयपुर।
[7] डॉ. रमेश सोनी (सम्पादक): रिसर्च लिंक: Issue-86, vol-x (3) may-2011 प्रकाशक डॉ. रमेश सोनी, इन्दौर।
[8] एस. लूर्दुसामी एवं सरिता सहाय लोकसाहित्य संस्कृति प्रकाशन इन्दौर, 2004।
[9] डॉ. एम.एल. वर्मा भीलों की सामाजिक सामाजिक व्यवस्था निकुंज प्रकाशन बड़वानी 1995।

*Corresponding author.
E-mail address: anandsinghpatelraj@ gmail.com